SCHIZOPHRENIA मनोविदलता
SYMPTOMS AND ETIOLOGY कारण एवं लक्षण

मनोविदलता एक गंभीर मानसिक बिमारी है जो वास्तव में चिंतन एवं क्षुब्ध मनोदशा की विकृति है जिसकी उत्पत्ति भविष्यवृत्ति रोगी किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता तथा किसी संप्रत्यय के विकास में अपनी असमर्थता के कारण में करता है उसमें गलत प्रत्यक्षण एवं विश्वास उत्पन्न होता है वास्तविकता को नहीं समझ पाता है और भाषा तथा संबंधित संवेगात्मक अभिव्यक्ति में भी असमर्थ रहता है। जिसे सर्वप्रथम Emil Kraeplin ने इसे Dementia praecox डिमेंशिया प्रिकोक्स के नाम से पुकारा। लेकिन 1911 में स्विस मनोवैज्ञानी Blueler ने इसे स्कीजोफ्रेनिया Schizophrenia के नाम से पुकारा जिसका शाब्दिक अर्थ होता है Spliting of personality व्यक्तित्व विभाजन। जिसको संतोषजनक परिभाषा देते हुए Holmes 1998 ने बताया कि – Schizophrenia is a serious disorder involving a decline in functioning along with hallucinations, delusions and/or distributed thought processes. Symptoms must persist for at least 6 month. यानि मनोविदलता एक गंभीर विकृति है जिसमें विभ्रम व्यामोह तथा/अथवा विशृंखल चिंतन प्रक्रिया सहित क्रियावाही ह्रास सम्मिलित होता है इन लक्षणों का कम से कम 6 महीने तक जारी रहना आवश्यक होता है।

मनोचिकित्सक द्वारा दिये गए शोधों के आलोक में मनोविदलता के तीन लक्षणों का उल्लेख मिलता है –

A. संरचनात्मक या संज्ञानात्मक लक्षण Positive or Cognitive Symptoms –

मनोविदलता का यह एक ऐसा सामान्य लक्षण है जिसमें रोगी सामान्य कार्यों की बहुलता दिखलाता है। इस श्रेणी के लक्षणों में व्यामोह विचारित चिंतन, संभाषण, विभ्रम तथा अनुपयुक्त भाव आदि प्रमुख हैं।

i. व्यामोह Delusion – मनोविदलता के रोगी में व्यामोह का भी लक्षण पाया जाता है व्यामोह का तात्पर्य एक ऐसा विश्वास होता है जिसके गलत होने के सही होने के बावजूद भी रोगी उसे गलत मानने को तैयार नहीं रहता है। कुछ रोगी एक ही व्यामोह से ग्रसित रहते हैं तो कुछ अनेक व्यामोह से। APA 1994 के अनुसार मनोविदलता में दंडात्मक व्यामोह ही प्रधानता होती है लेकिन इसके अलावे अन्य व्यामोह जैसे निमंत्रण, बड़प्पन एवं संदर्भ व्यामोह भी पाया जाता है दंडात्मक व्यामोह में रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि अन्य व्यक्ति योजना बनाकर उसे तंग करते हैं, डरा धमका रहे हैं या आक्रमण करने वाले हैं। संदर्भ व्यामोह में जब रोगी अन्य व्यक्ति को आपस में बातचीत करते देखता है तो उसे विश्वास हो

Scanned with CamScanner

जाता है कि लोग उसी के बारे में बातें कर रहे हैं। बड़प्पन व्यामोह में रोगी अपने-आप को बड़ा आविष्कारक, ऐतिहासिक व्यक्ति धार्मिक और राजनेता मान बैठता है। जबकि नियंत्रण व्यामोह में रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि उसके आवेग, भाव, चिंतन क्रिया आदि का नियंत्रण उसके द्वारा न होकर किसी दूसरे के द्वारा हो रहा है।

ii. विभ्रम - Hallucinations - इसके रोगी में श्रवण, दृष्टि, स्वाद, गंध तथा स्पर्श संबंधी विभ्रम के लक्षण भी पाए जाते हैं। प्रारंभ में दृष्टि तथा श्रवण विभ्रम की प्रधानता अधिक रहती है वह अक्सर ईश्वर, प्रेत या जीन के आवाजों को सुनता है तथा ईश्वर या अपने मृत संबंधियों के दर्शन करने के विभ्रम से भी ग्रसित रहता है। उसे यह भी विभ्रम हो जाता है कि उसके दुश्मन उसे बिजली के तार से या जहर देकर हत्या करना चाहते हैं। तथा उसके आस पास विषैली गैस छोड़ दी गयी है जैसे अनेक विभ्रम के लक्षण देखने को मिलते हैं।

iii. विघटित चिंतन तथा संभाषण - Disorganised thinking and speech - मनोविदलता के रोगी का चिंतन पैटर्न तथा संभाषण पैटर्न काफी विघटित होता है विघटित संभाषण का अर्थ ऐसा संभाषण होता है जिसमें रोगी के विचारों के बीच साहचर्य काफी ढीला ढाला होता है उसका विचार भी इतना जल्द बदलता है कि सुनने वाला उसका कोई अर्थ नहीं निकाल पाता है।

iv. Inappropriate affect अनुपयुक्त भाव - इसके रोगी में परिस्थिति के अनुरूप नहीं वरन उससे भिन्न संवेग व्यक्त करने के लक्षण पाए जाते हैं। जैसे - प्रसन्नता की सूचना पाकर दुख व्यक्त करते हैं इसी तरह जब हैं भयानक या धक्का देनेवाली सूचना दी जाती है तो वे हंसने लगते हैं।

B. Negative symptoms - नकारात्मक लक्षण - इसका तात्पर्य उन लक्षणों से होता है जिसमें रोगी के सामान्य कार्यों की मनोवैज्ञानिक कमी पायी जाती है। इस श्रेणी के निम्नलिखित प्रमुख लक्षण आते हैं.

i. भाषा विकृति - Language disorder - इसके रोगी के भाषा में गड़बड़ी के लक्षण देखे जाते हैं। इसके रोगी पूरी तरह शांत मौन या गूंगे व्यक्ति की तरह रहते हैं। उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि जब वे बोलेंगे तो उनका मुंह खुलेगा तो रोगों के कीटाणु कीटाणुओं से पूरा वातावरण दूषित हो जाएगा। कभी-2 तो वे यह भी कहते हैं कि दैवी शक्ति उन्हें बोलने से रोक रही है। इसके कुछ रोगी लच्छेदार वाक्यों का प्रयोग तो करते

है पर भाषा शब्द तथा उच्चारण में कोई तालमेल नही होता है।
2. इच्छा शक्ति की क्षुब्धता - Disturbance in volition - इसके रोगी में भावशून्यता, अभिरूची एवं ऊर्जा की कमी महसूस करना तथा किसी कार्य को पूरा करने में असमर्थ रहना आदि के लक्षण देखे जाते हैं
3. बाह्य वातावरण के साथ क्षुब्ध संबंध - Disturbed relationship with external world - Bellack 1989 ने बताया कि इसके रोगी अपने आपको पर्यावरण से सांवेगिक एवं सामाजिक रूप से हटा लेते हैं ये कल्पना दुनिया में खो जाते हैं और अपने आप को अन्य लोगों से दूर कर लेते साथ ही किसी से बात भी करना पसंद नही करते हैं।

c. Psychomotor Symptoms मनोपेशीय लक्षण - मनोविदिलता के रोगी में मनोपेशीय लक्षण भी पाए जाते हैं। उनके हाव-भाव, गति एवं दिश काफी विस्मयपूर्ण तथा हास्यापद होते हैं। रोगी लम्बे समय तक खामोश घंटो हुए एवं सीधी मुद्रा जैसे एक पैर पर घंटो खड़ा रहते सफलरहते कभी-2 रोगी तेजी से हाथ पैर भी फेंकता है और तेजी से इधर उधर दौड़ता फिरता है

ETIOLOGY - इसके कारण के संबंध मे किए गए अध्ययनों से निम्नलिखित प्रमुख कारणों का संकेत मिलता है।

i. वंशपरंपरा Heredity - कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इसका प्रमुख कार वंश परंपरा ही है। White ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि इस रोग के होने के 90% कारण वंश परंपरा ही है।

ii. दोषपूर्ण पारिवारिक वातावरण Faulty Family Pattern - कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जब परिवार में माता पिता के बीच विकृत संबंध तथा बच्चों के पालन पोषण की दुषित प्रणाली इस रोग को अधिक प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त जब माता पिता पालन पोषण के दौरान प्रभुता की मनोवृति दिखाते हैं या बच्चों को अधिक सुरक्षा देते हैं तो वे पूर्णरूपेण परिपक्व और स्वावलंबी नही हो पाते हैं ये मामूली कठिना से घबराकर व्यर्थ ही तनाव के शिकार हो जाते हैं जिस कारण ये परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार नही कर पाते हैं। माता पिता के बीच तनावपूर्ण संबंध से भी बच्चों की देखभाल सामान्य रूप से नही और बच्चे प्यार और स्नेह से वंचित रह जाते हैं जिसकारण वे भय असुरक्षा तथा शंका से ग्रसित हो जाते हैं। ये अपने-आपको अयोग्य और अकुशल समझने लगते हैं। फलत: धीरे-2 उनका संपूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है और मनोविदिलता के लक्षण स्पष्ट होने लगते हैं।

3. विफलता - Frustration - जब व्यक्ति संघर्षपूर्ण परिस्थिति से घिर जाता है और बार-2 उसे विफलता हाथ लगती है तो इस संघर्षपूर्ण परिस्थिति से बचने के लिए सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया करने लगता है और अभियोजन हेतु नये-2 ढंग अपनाने लगता है। व्यक्ति की यह मनोदशा उसके व्यक्तित्व को विघटित कर देती है और वह भ्रम, विभ्रम और व्यामोह के चुंगल में बुरी तरह फंसकर इस रोग का शिकार हो जाता है।

4. काम शक्ति प्रतिगमन - Libido regression - जर्मन मनोवैज्ञानिक Jung ने दमित भाव ग्रंथी तथा काम शक्ति के प्रतिगमन के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

5. हीन भावना Inferiority feeling - Adler ने बताया कि हीन भावना के कारण व्यक्ति अभियोजन में असफल हो जाता है जिसकारण वह भ्रम भय, शंका तथा व्यामोह से ग्रसित होकर मनोविदलता के लक्षण को विकसित कर लेता है।

6. मानसिक संघर्ष - Mental conflict Freud का मत है कि यदि सामाजिक बाधाओं के चलते व्यक्ति की काम शक्ति संतुष्ट नहीं हो पाती है तो व्यक्ति मानसिक संघर्ष से घिर जाता है जो मनोविदलता का कारण बनता है।

7. अंतर्मुखी व्यक्तित्व - Introverted type of personality वाले व्यक्ति में मनोविदलता के लक्षण अधिक देखे जाते हैं।

8. मस्तिष्क आघात Brain trauma - कुछ विद्वानों का मत है कि मस्तिष्क में किसी प्रकार के आघात के कारण मस्तिष्क की सभी क्रियाएं विकृत हो जाती हैं जो मनोविदलता को जन्म देती है

9. दोषपूर्ण शिक्षा Faulty learning - कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बचपन में दोषपूर्ण शिक्षण के हो जाने से वह शिक्षण आगे चलकर अभियोजन में बाधा उत्पन्न करता है जिससे इस रोग के आगमन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

इसप्रकार देखते हैं कि मनोविदलता के अनेक कारण एवं लक्षण हैं यदि उनमें किसी एक का प्रधान मानते हैं तो उसकी आंशिक और अवैज्ञानिक व्याख्या होगी क्योंकि यदि किसी रोगी में इसकी उत्पत्ति का कारण कोई एक है तो दूसरे रोगी में कोई दूसरा ही इस रोग का कारण हो सकता है। अतः सभी कारणों एवं लक्षणों के आधार पर ही इसकी व्याख्या संभव है।

19/02/2018